

... माँ का वक्ता (तेवहवाँ अध्याय) ...

उधर चितोड़ा पहुँचने के बाद कल्लाजी, जयमलजी एवं पताजी ने सभी राजपुत योद्धाओं के साथ मिलकर योद्धिक रणनीति के अनुसार सबसे पहले अपने स्वामी उदयसिंह को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने की योजना तैयार की तथा राणाजी के साथ मना करने के बावजूद भी इस हिन्दू सूरज की रक्षा को अपना प्रथम कर्तव्य मानते हुए मेवाड के वीर सरदारों ने चितोड़ा के गुप्त रास्ते से महाराणा को सुरक्षित रूप से गीर्वा (वर्तमान उदयपुर शहर) की उँची व गहरी पहाड़ियों के बीच पहुँचा दिया।

उसके बाद राजपुत रणबाँकुरे अब निश्चिन्त होकर युद्ध के इन्तजार में अड़ीग खड़े हुए हैं। इसी क्रम में वीरवर कल्ला राठोड ने भी जयमलजी के आदेशानुसार अपना मोर्चा संभाल लिया और सम्पूर्ण श्रद्धा के साथ उन्होंने अपनी आराध्या देवी जगदजननी जगदम्बा का आह्वान किया। कल्लाजी की सौम्य भावना से भरी इस निश्छल प्रार्थना को सुनकर प्रसन्नचित्त माँ ने उनको साक्षात् वर दिया कि “हैं कल्याणसिंह राठोड, मैं हमेशा ही तेरे साथ हूँ इसलिए चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं है और मैं तुझे आशीर्वाद देती हूँ कि युद्धक्षेत्र में जब तक पीछे मुड़कर नहीं देखेगा, तब तक तू अखण्ड अजेय बना रहेगा।”

... ऐलावे-जंवा (चौदहवाँ अध्याय) ...

आब दोनों तरफ से इस महासंग्राम की तैयारिया शुरू हो चुकी है। एक तरफ जहाँ मुगल आज़म अकबर के पास १३ लाख सैनिकों की विशाल फौज, अस्त्र-सम्प, औजारों व हथियारों का जखीरा, बन्दूकें तथा तोपखाना भी था। वहीं मेवाड़ी सेना के हवाले २२ हजार जाँबाज़ योद्धा और पारम्परिक हथियारों के सज्जान और कुछ भी नहीं था। इसके बावजूद भी चितोड़ी सुरमाओं के बुलन्द होसलों के आगे मुगल सेना भयभीत हो रही थी।

इस युग में लड़ाई का यह नियम भी था कि वीर योद्धा सूर्य की साक्षी में ही सामने-सामने भीड़ते थे और सूर्यास्त होते ही युद्ध विराम का ऐलान हो जाता था। सर्वमान समय के प्रमुख सिद्धान्त ‘प्रेम और जंग में सब कुछ जायज है’ के सम्मान से छल-कपट का सहारा लेने की प्रथा तब कलई प्रचलन में नहीं थी। इस युद्ध में जहाँ राजपुती परिवेश के सूर्यवंशी योद्धा खड्गपति बनकर दुश्मन का सीना साफ करने में सिद्धहस्त थे, वहीं मेवाड के भील सैनिक भी तीर-कमान और मेकान के बादशाह थे। इसलिए चितोड़ी सेना के इस अद्भूत संयोग के बारे में सीधे-सीधेकर मुगलों की नींद हराम हो चुकी थी।